मांगटीकेसे कर्णाभूषणतकके अलंकार

अलंकारोंका अध्यात्मशास्त्र एवं सूक्ष्म-स्तरीय प्रयोग !

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण विषय '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. केशमें धारण करनेयोग्य अलंकार २३

१ अ. जूडे एवं चोटीमें धारण किए जानेवाले अलंकार २३

* स्वर्णसे बने सूर्य एवं चंद्रके प्रतीकात्मक चित्र जूडेपर धारण करनेसे कौनसे लाभ होते हैं ? २३

* मोतियोंसे युक्त स्वर्णकी वेणी जूडेपर धारण करनेके संदर्भमें साधिकाद्वारा किए सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी प्रयोग २४

१ आ. मांगमें धारण किया जानेवाला अलंकार : मांगटीका ३२

* स्त्रियोंद्वारा मांगटीका धारण करनेके सूक्ष्म-स्तरीय लाभ दर्शानेवाला चित्र ३५

२. कुमकुम (सौभाग्यालंकार) ३६

* कुमकुम लगानेका महत्त्व एवं लाभ ३६

* अपने माथेपर कुमकुम दाएं हाथकी अनामिकासे क्यों लगाएं ? ३७

* एक स्त्रीद्वारा दूसरी स्त्रीको कुमकुम मध्यमासे क्यों लगाएं ? ३८

* बिंदीकी अपेक्षा कुमकुम लगाना अधिक उचित क्यों ? ४०

* 'सनातन' कुमकुम (सात्त्विक कुमकुम) एवं मोम : विशेषता एवं अनुभूति ४१

* विधवा स्त्रियोंको कुमकुम क्यों नहीं लगाना चाहिए ? ४३

३. कानमें धारण किए जानेवाले अलंकार ४६

* कलियुगमें कानमें अलंकार पहनना आवश्यक क्यों है ? ४६

* कर्णकुंडल : विविध प्रकारकी स्वर्णकी एवं खोखले चंद्रकोर आकार की बालियां धारण कर साधिकाद्वारा किए गए सूक्ष्मसंबंधी प्रयोग ४७
* झुमके : महत्त्व एवं विविध प्रकारके झुमके पहनकर साधिकाद्वारा किए गए सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी प्रयोग ५१
* कर्णफूल : फूलके आकारके हीरेके कर्णफूल देखकर किया गया 'सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी परीक्षण' ५६
* साधिकाद्वारा विविध प्रकारके सात्त्विक कलाकृतियुक्त कर्णफूल धारण कर किए गए सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी प्रयोग ५९
* कानके छोरपर एकसे अधिक छेद कर उनमें लौंग समान अलंकार धारण करना अनुचित क्यों है ? ६४

४. नाकमें धारण किए जानेवाले अलंकार : लौंग एवं नथ ६६

* नथ मोतियोंकी क्यों होती है ? ६८
* मोतीकी नथका सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी चित्र ६९
* देवीको अर्पित मोतीकी नथका सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी चित्र ६९

५. स्वर्णकी सिकडी सदैवके स्थानपर धारण न कर दूसरे अलंकारोंके स्थानपर धारण कर किए गए सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी प्रयोग ७७

* अलंकारके विशिष्ट आकारके कारण देवताका तत्त्व ग्रहण होनेसे गंधतरंगें निर्मित होकर जीवको उसका लाभ होना ७९

६. अलंकारोंसे संबंधित देवता, देवताका कार्यरत भाव, अलंकार धारण करनेवालेका तथा उसे देखनेवालेका भाव ७९

७. आध्यात्मिक कष्टसे पीडित तथा कष्टमुक्त जीवोंको अलंकार धारण करनेपर तारक एवं मारक स्तरोंपर होनेवाला लाभ ८०

८. विविध अलंकारोंके कारण जीवको होनेवाली अनुभूतियोंकी मात्रा ८१

- कुछ अन्य संबंधित सूत्र ८२
- 'अलंकारों'संबंधी अनुचित विचार और उनका खंडन ८५

भूमिका

त्यौहार-उत्सवादि अवसरोंपर आज भी हिन्दू स्त्रियां संपूर्ण शरीरपर अलंकार धारण कर सुशोभित होती हैं । अलंकारोंसे स्त्रीका लावण्य अधिक निखरता है । विविध प्रकारके अलंकार धारण करनेका उद्देश्य केवल सौंदर्यवृद्धि नहीं है । हिन्दू धर्ममें प्रत्येक अलंकार उस विशिष्ट स्थानपर धारण करनेके पीछे अर्थपूर्ण अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण है । यही दृष्टिकोण इस ग्रंथमें बताया गया है ।

अलंकार ईश्वरीय चैतन्यके संग्राहक एवं अनिष्ट शक्तियोंके निर्दलनकर्ता हैं । अलंकार धारण करनेसे अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट अल्प होकर शरीरमें विद्यमान उस विशिष्ट स्थानकी काली शक्ति नष्ट होनेके साथ ही सात्त्विकता बढनेमें भी सहायता मिलती है । अलंकार धारण करनेके सूक्ष्म परिणाम स्थूल नेत्रोंसे नहीं दिखाई देते; परंतु उन्हें सूक्ष्मरूपसे अनुभव किया जा सकता है । सूक्ष्मका ज्ञान समझनेमें सक्षम सनातनकी कुछ साधिकाओंद्वारा इस संदर्भमें किए गए 'सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी परीक्षण' एवं बनाए गए 'सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी चित्र' देखनेपर अलंकारधारणा का महत्त्व मनपर सुदृढ होता है । अलंकारधारणासे साधिकाओंको हुई अनुभूतियां अलंकारोंके प्रति श्रद्धा बढाती हैं ।

अलंकारधारणासे अपेक्षित आध्यात्मिक लाभ होने हेतु अलंकारोंका सात्त्विक होना आवश्यक है । अलंकारका आकार एवं उसकी कलाकृतिके साथ ही अलंकार धारण करनेवाला व्यक्ति सात्त्विक हो, तो अलंकारसे सात्त्विकता एवं चैतन्य किस प्रकार प्रक्षेपित होता है, यह इस ग्रंथमें दिए कुछ सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी प्रयोगोंसे ज्ञात होगा । सात्त्विक अलंकारोंके साथ ही तामसिक अलंकारोंको कैसे पहचानें, इस अनुभवके लिए दोनों प्रकारके अलंकारोंके छायाचित्र एवं 'सूक्ष्म-ज्ञानसंबंधी परीक्षण' ग्रंथमें दिए हैं ।

अलंकारधारणाका महत्त्व ध्यानमें रख उस अनुसार कृति कर, अर्थात अलंकार धारण कर ईश्वरके निकट जानेका मार्ग अधिक सुगम हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । **- संकलनकर्ता**